शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 2 | उदयपुर बुधवार 01 फरवरी 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

भारतीयता के मायने

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

भारतीयता से तात्पर्य भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन, लोकाचार और समग्र लोकानुभूति की दर्शना से है जिसमें भारतीय लोक की विविध रंगी छवि और सौंदर्य का भारतीयकरण मिलता है। यह विविधता तथा समग्रता 'भारत के सम भारत' में ही परिलक्षित होती है।

पूरे विश्व में ज्ञान सम्पन्नता का उदयोद्भव यहीं से हुआ। खोज की पगडंडियों के जितने प्राचीनतम पड़ाव यहां मिलते हैं, अन्यत्र कहीं नहीं मिलेंगे। धर्म और अध्यात्म के जितने पथ यहां गतिमान बने, अन्यत्र कहीं नहीं बने। रहस्य रोमांच के जितने अनूठे अजूबे यहां हैं, अन्यत्र कहीं उनकी प्रतिध्वनि नहीं मिलेगी।

इसी धरती पर अन्यान्य लोकों का प्राणी आकर धन्य होता है। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के संस्कार इसी माटी को सम्पोषित किये रहते हैं। यहीं जन्म जन्मान्तर और युग युगीन इतिहास के आलोक में पारदर्शिता के पंकज अपनी सुवास से समता, समदृष्टि, सौहार्द्र तथा समवाय की पंखुड़ियां पल्लवित करते हैं।

भारतीय जीवनचक्र प्रकृतिजन्य परिवेश से घनिष्ट रूप में बुनी हुई रस्सी की तरह है, भस्म होने पर भी जिसकी रूप दक्षता विलुप्त नहीं होती है। भारतीय पर्यावरण, खानपान, रहनसहन, ऋतुचर्या सब एक दूसरे से मेलमिलाप करते एक ऐसे जीवनचक्र का निर्माण करते हैं जो लोकमंगल की भारतीय अवधारणा के संपोषक तत्वों को बेमिशाल बनाते हैं।

भारतीय धन्य धरा का ही यह प्रताप है कि यहां सर्वाधिक तीर्थस्थलों और तीर्थंकरों की सन्निधि मिली हुई है।

घने पहाड़ों तथा गिरि कंदराओं में तीन-तीन शताब्दियों तक के तपसी, तपस्वी, औघड़, संत, महंत, अवधूत, संताणियां एवं अवधूतणियां अपनी काया को कंचन करने, आत्म से परमात्म पाने में आत्मार्थी, परमार्थी बने हुए हैं।

असत्य से सत्य की ओर बढ़ते पथिक, अंधकार से प्रकाश की ओर चलते रहनुमा तथा मृत्यु से अमरत्व प्राप्ति के पयोधर यहीं मिलेंगे।

यहीं मिलेंगे ऐसे रणबांकुरे जो मुंड खो देने पर भी रूंड से अधिक ओजस्वी तेजस्वी तथा यशस्वी बन दुश्मनों के दांत खट्टे कर लोक देवत्व के साक्षी बन जन-मन के श्रद्धा श्रद्धेय बनते हैं।

ऐसी नदियां यहीं हैं जिनका पानी कभी उतरता नहीं और जो ठेठ पाताल तक अपना बहाव लिए बतरस बनी हुई हैं। प्रलय, काल, महाकाल और खंड प्रलय इसी धरती पर हुए। अकाल, अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि यहीं अपना विद्रूप दिखाते हैं। यहीं कैलाश लोक से शिव-पार्वती धरती पर आगमन करते हैं। कृष्ण-कन्हैया का रास यहीं रचता है। यहीं भूतों तथा दिव्य आत्माओं के अदृश्य मेले महफिल देते हैं। देव-घोड़े चेटक पर प्रताप का ताप अभी ठंडा नहीं पड़ा है। भक्तिमती मीरां का पदचाप सर्वभाषाओं, आंचलिक बोलियों और अध्यात्म की विमल वाणियों में कंठासीन की महीन बुनावट से झंकृत पदावलियों में अनुगूंज देता अविराम विराम है। ऐसे भारतीयता के असंख्य शब्द-स्वर चेतन से जुड़े तथा जड़ से चेतन बने सचेतन हो रहे हैं। बीज से फल और फल से बीज बनने-बनाते का यह सृष्टि चक्र न जाने किस युग्मराग से झंकृत होता न जाने कब से ध्वनित, प्रतिध्वनित याकि अतिध्वनित हो रहा है।

पत्रकार अब्दुल लतीफ सम्मानित

गणतंत्र दिवस पर जिला स्तरीय समारोह में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया से सम्मानित होते 'राष्ट्रदूत' के पत्रकार अब्दुल लतीफ। साथ में है जिला कलेक्टर रोहित गुप्ता।

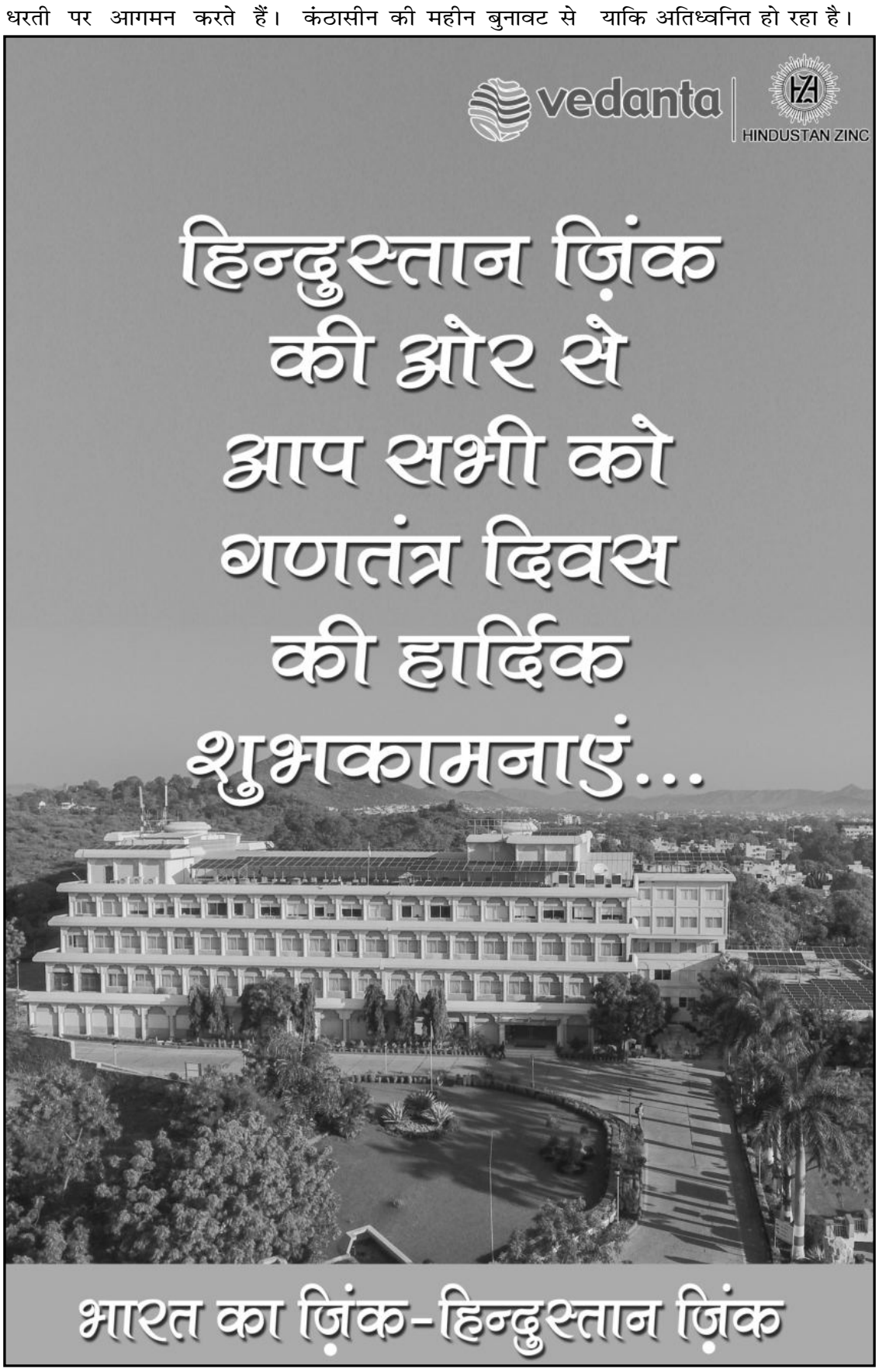

स्मृतियों के शिखर (25) : डॉ. महेन्द्र भानावत

लोकसंस्कृति संवाहक साधो भाई प्रफुल्लजी

ऐसे व्यक्ति अधिक तो नहीं होते मगर होते हैं जिनसे कभी मिलना नहीं हुआ और मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं रहती तब भी वे घनिष्ट बने रहते हैं और निरंतर यह एहसास बना रहता है कि अन्यों की तरह वे भी अपने आत्मीय और पारिवारिक ही हैं। डॉ. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' भी उन्हीं लोगों में से हैं जो लेखन-परिचय से जुड़े और अभी भी उसी परिचय के कारण जुड़े हुए हैं।

भारतीय लोककला मंडल में रहकर जब विविध अंचलों की लोकसंस्कृति-साहित्य-कलाओं से रू-ब-रू होने का सिलसिला प्रारंभ करना चाहा तो 'रंगायन' नामक मासिक पत्र शुरू किया गया और उसके माध्यम से आंचलिक लोक धरोहर से जुड़े विद्वान-मित्रों से संपर्क बनाये रखने की आवश्यकता महसूस की तब डॉ. श्याम परमार, डॉ. मालती शर्मा, डॉ. विद्याविन्दुसिंह, उषा वर्मा, बसंत निरगुणे, डॉ. पूरन सहगल जैसे नाम हमारे खाते खते। उनमें से एक नाम डॉ. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' भी मिला। ये सभी नाम केवल कला मंडल तक ही सीमित नहीं रहे। असामयिक निधन होने के कारण श्याम परमार को छोड़कर शेष के साथ हमारे संबंध अब भी घनिष्टतम ही बने हुए हैं।

प्रफुल्लजी की तरह साहित्य सरोवर-सागर में ऐसे और भी मनीषी-रत्न हुए हैं जो किसी एक क्षेत्र के ही धुरंधर नहीं हैं। वे सबरंग सर्व लेखन के सिद्ध बने हुए हैं। ऐसा भी हुआ जब लेखक सभी विधाओं में निष्णात होते हुए भी अपने को किसी एक विधा का ही 'मुख्य' मानता है और जिस विधा का वह मुख्य है उससे भिन्न विधा में वह अपने को अधिक पुरस्कृत-सम्मानित भी कभीकभाक होता पाता है। जिसके चित्त पर जो चढ़ जाय वही बाजी जीत बन जाता है या बना दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे किसी पौधे पर किसी और पौधे की कलम चढ़ा दी जाय। जो पौधा चल निकले वही लोगों की निगाह में अधिक निखर आता है या नखराला बन जाता है। और अब तो ऐसा वक्त आ गया है कि कुछ कहते नहीं बनता। साहित्य में यथार्थ-बोध के चलते मैंने कहीं लिखा भी-

एक रात में लिखी पोथियां,
छपी दूसरी रात ललाम।
हुई पुरस्कृत रात तीसरी,
जय रघुनंदन जय सियाराम।।

और आगे बढ़े तो पहले से ही तै हो जाता है कि जिस कृति को लेखक अब जन्म देगा उसे पुरस्कृत कर दिया जाएगा। पुरस्कारों-सम्मानों की हाताहूती का खेल मैं भलीप्रकार देख रहा हूं लेकिन अपवाद स्वरूप भी हैं जो सोने के सिक्के बने हुए हैं। वे कागज के नोटों की तरह फड़फड़ाते नहीं हैं।

प्रफुल्लजी उन रचनाकारों की तरह हैं जो पके भीगे गाढ़े बने गंभीर मिजाज के तथा साधन विहीन होते हुए साधनामूलक जीवनधर्मिता से अपना लेखन कर रहे हैं। मेरी उन्हीं लोगों से अधिक दोस्ती है।

मेरे अंदाज में प्रफुल्लजी कम मुखर और मुदित स्वभाव के हैं। काका हाथरसी या प्रभाकर माचवे की तरह या फिर हमारे इधर देखें तो डॉ. प्रकाश 'आतुर' और नंद चतुर्वेदी की तरह हाके-ठहाके और हास्य बिखेरने वाले नहीं अपितु नरोत्तमदास स्वामी या फिर डॉ. सत्येन्द्र की तरह 'बात से बात' और 'हां-हूं' में बोलते-बतियाते अपना काम चलाते सदैव मौन रहने वाले ही हैं। उनका नाम भी 'मौन' है। जिसका नाम ही मौन हो वह मौनी नहीं बना रहेगा तो अपने जीवन को विसंगति दोष में क्यों डालेगा। कई लोग कहते भी हैं, मौन बने रहने से कई तरह की बाधाओं का स्वत: ही शमन हो जाता है। जो बाधा मुक्त है वह साधो संत है। प्रफुल्लजी मेरे लिए संत ही हैं।

उनके एक पत्र का हवाला देना चाहूंगा जिसमें उन्होंने लिखा-

''आपने अपनी दूरदृष्टि एवं भारतीय लोककला मंडल से संबद्ध कर रंगायन, लोककला पत्रिकाओं एवं अन्यान्य संकलन ग्रंथों में मेरे शोध-आलेखों को प्रतिष्ठापित कर मुझे जो गौरव प्रदान किया, वह अविस्मरणीय है। पलटकर देखने से यह सब अभिज्ञात है। मैं आपके सामर्थ्य को नमन करता हूं। मैं लोकसंस्कृति पर केन्द्रित ही कार्य संपादन कर रहा हूं।''

-12 फरवरी, को लिखे, तिथिविहीन पोस्टकार्ड से

ऐसा कोई अन्तर-मुखर साधो संत-पुरुष ही लिख सकता है। एक अनमिले मेरे जैसे सामान्य और साधारण व्यक्ति के प्रति उनका यह विनीत भाव मुझे हर वक्त उनके बड़प्पन के प्रति नमनीय बनाये रखता है।

अन्य अनेक रचनाकारों की तरह प्रफुल्लजी की साहित्यिक यात्रा भी कविता-लेखन से प्रारंभ हुई जैसी कि मेरी भी हुई। हिंदी मैथिली और नेपाली में उन्होंने कई कविताएं रचीं और खूब छपीं भी। फिर वे निबंध लेखन की ओर प्रवृत्त हुए। घुमक्कड़ी प्रवृत्ति होने से उन्होंने आंचलिक रिपोर्ताजपरक लेखन किया। भारतीय विरासत से लगाव होने के कारण उन्होंने देश के कई खंडहरों, स्मारकों और संग्रहालयों का अवलोकन कर पुरातत्व और इतिहास के प्रति अपना लगाव बनाये रखा। इस दौरान उन्होंने अनगिनत पुरावशेष, कलात्मक सामग्रियां एकत्र कर उनसे संबंधित जानकारियों से अपने को समृद्ध-पुष्ट किया।

खंडहरों और निर्जन स्थानों पर उन्होंने बड़े साहस और बहादुरी से अपना परचम दिया। ऐसे साहसिक अजूबे करतब के कारण वे 'खंडहरों का भूत' नाम से भी चर्चित हुए। उनका यह कार्य खौलते हुए कड़ाहे में हाथ डालने जैसा ही था। मुझे उनके इन कार्यों की कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने भी कभी कुछ नहीं लिखा और न मैंने कभी जानने की या उनसे पूछताछ की कोशिश ही की।

लेकिन जब मैंने 1979 में 'पीछोला' नाम से एक पाक्षिक पत्र प्रारंभ किया तो उसमें 'अपनी कहनी' नाम से एक स्तंभ शुरू किया। प्रफुल्लजी से जब मैंने इस स्तंभ में लिखने का आग्रह किया तो उन्होंने मुझे अपनी कहनी लिख भेजी जिसका प्रकाशन मैंने पीछोला में किया। उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन के साथ-साथ लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति के जुड़ाव और इस साहित्य की मूल्यवान उपादेयता पर भी प्रकाश डाला जिससे मेरा इनसे जुड़ाव और अधिक आत्मीय तथा अपनत्व लिए बना। इस टीप में उन्होंने लिखा-

''लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति के प्रति विशेष आकर्षण नेपाल प्रवास (1963-73) में हुआ। वहां की रंग-बिरंगी जनजातियां, उनके सरल लोकगीत, कलात्मक लोकनाट्य, रंगीन मेले, पर्व-त्यौहार आदि अपनेआप में विशिष्ट लगे। वहां से लौटने के बाद मैंने मिथिलांचल के लोकसाहित्य एवं लोकसंस्कृति को अपने शोध-सर्वेक्षण का विषय बनाया। इस जीवन यात्रा में मैंने सीखा कि यह क्षेत्र जितना विशाल है, उस विशालता के एक अंश को भी मापने में हमारा एकल जीवन बिन्दु स्वरूप है अत: हमें अपने पूर्वजों के किये कृत्यों को आगे बढ़ाना चाहिए। इसे यों ही व्यतीत होने देना उचित नहीं है। अपनी विकास यात्रा में हर विरोध-अवरोध को वरदान मानना चाहिये क्योंकि इससे आगे बढ़ने की उत्तेजना प्राप्त होती है।''

-पीछोला, वर्ष एक, अंक 11, 16 अप्रेल 1980

डॉ. प्रफुल्लजी का रंगायन में पहला लेख मई 1971 के अंक में प्रकाशित हुआ। यह महाकाली लोकसंस्कृति पर था। उन्होंने नेपाल में प्रचलित लोकनाट्य रमखेलिया पर लिखा तो महनार के लोकदेवता पर भी लिखा। वैशाली के बसावन पर लिखा तो थरुहट की लोककथाओं पर भी लिखा। मिथिला के शशिया पर लिखा तो वहां के प्रेमाख्यान रेशमा, चूहर की भी खबर ली।

लोकदेवता धनपाल, दिक्पाल, भीमसेन के परचों की प्रभावी दी तो नैना जोगिन और टुसु पर्व के लोककलात्मक सौंदर्य को भी विश्लेषित किया। राजवंशी क्षेत्र की यात्राओं में लोकधरा के विभिन्न पक्षों की वृतांत-टीपों को भी आंखों देखा सच दिया जिसे क्रमश: प्रकाशित किया। विविध किश्तों में उनका मैथिली बालगीतों का सरस अध्ययन भी पाठकों की मनपसंद बना जो सर्वथा अज्ञात अथवा आंशिक अल्पज्ञात ही था।

कहना नहीं होगा कि प्रफुल्लजी द्वारा दी गई यह जानकारी एक नवीन दृष्टि लेकर आई। सुदूर नेपाल और उससे लगे अंचलों में जो सामग्री बिखरी पड़ी है उसकी सुध लेकर उन्होंने देश के विभिन्न अंचलों में फैली-बिखरी जानकारी के सर्वेक्षण-अध्ययन-मनन के लिए शोधकर्ताओं, शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों को भी चेतित किया।

हमने तो यह कार्य प्रमुखता से किया ही। रंगायन का प्रत्येक अंक ही इस तरह की जानकारी देने का अगुवा बना। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जो कार्य विद्वानों तथा विश्वविद्यालयों द्वारा किया गया उसका आधे से ऊपर अप्रकाशित है जो विद्वानों की नजर में बेनजर बना हुआ है।

अभी तो विविध विश्वविद्यालयों में शोधप्रबंध और लघु शोधप्रबंधों के रूप में जो कार्य संपादित हुआ है उसकी सूची स्वयं संदर्भित विवि तक में नहीं है। समय-समय पर यह कोशिश हमारे द्वारा की गई पर उसे भी काफी समय हो गया और उसके बाद तो धड़ाधड़ लोक साहित्य-संस्कृति पर कार्य हो रहा है। शोध की गुणवत्ता पर भी सवाल उठते रहेंगे पर ऐसे विषयों पर कार्य हो रहा है, यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष है।

हमारी भी यह उपलब्धि ही रही कि अत्यंत छोटे-छोटे महत्वपूर्ण नहीं समझे जाने वाले बिंदुओं, विषयों पर हमने मात्र एक-दो पृष्ठों में संपादकीय टीपें लिखीं पर उन्हीं विषयों को लेकर विदेशी विद्वानों तक ने गहन शोधाध्ययन किया।

मेरे पास ऐसे कई पत्र हैं जिनमें विद्वानों ने रंगायन में प्रकाशित सामग्री का ऐसे अनेक रूपों में उपयोग किया जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। कइयों ने तो सुझाव दिया कि रंगायन में छपे लेखों पर ही शोधात्मक टिप्पणियों द्वारा बहुत सारी नई जानकारी दी जा सकती है।

प्रफुल्लकुमारजी को यह तो श्रेय है ही कि उन्होंने अपने लिए ही सही, नई जानकारियों से अपने को समृद्ध किया पर उनका जो असर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष पड़ा उसके प्रभाव को कोई शब्द व्यक्त नहीं कर सकता। उन्होंने स्वयं भी उन विषयों को विस्तार देकर पुस्तकें लिखी हैं। अन्य प्रांतों में भी ऐसा काम हुआ है। मैंने स्वयं ने कई पुस्तकें, आलेख तथा मोनोग्राफी पुस्तिकाएं लिखी हैं। देश के अनेकों जिज्ञासुओं को सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के लिए प्रेरित किया है और उन्हें अपने साथ लेकर भी कई प्रांतों का परिभ्रमण कराया है।

लगभग 50 वर्ष होने को आये, प्रफुल्लजी से मेरा संपर्क पूर्ववत बना हुआ है। उन्होंने भी लोकसंस्कृति की पगडंडी से शुरू किये कार्य को लगातार बढ़ाकर जो विस्तार दिया वह भी सबकी जानकारी में नहीं आ पाया है।

यह विडंबना ही है कि हम स्वयं भी बहुत सारे उस कार्य से भिज्ञ नहीं हैं। और तो और जिन साथियों से हमारी लंबी दोस्ती है उनके कार्यों से भी हमारा सतही परिचय ही है। वे अभी भी उतने ही क्रियाशील, जीवंत तथा जयविजय बने हुए हैं। मोबाईल संस्कृति ने हमें कई दृष्टियों से कई रूपों में मोबाईल कर दिया है। प्रफुल्लजी से यदाकदा बात कर, उनकी वाणी सुन, विचारों का आदान-प्रदान कर एक निराला आनंद मिलता है।

उनके पत्रों में वही विनम्रता तथा लुलिता झलकती है। 12 मई 2016 के पत्र में उन्होंने लिखा-

''आपने मुझे भारतीय लोककला मंडल, रंगायन, लोककला और वहां से प्रकाशित मानक ग्रंथों में सम्मानजनक स्थान दिया। इसने मुझे देश के अन्यान्य लोकसंस्कृतिविदों से जोड़ा। मैं आज जो भी हूं, आपकी आत्मीयता इसके मूल में है। लगता है, हमें और कुछ करना बाकी है।''

उनके इस 'लगता है हमें और कुछ करना बाकी है' लेखन को वे भी और मैं भी आत्मसात किये हूं। प्रफुल्लजी से अपने जुड़ाव को मैं सबसे बड़ी पूंजी, सबसे बड़ी धरोहर और उत्फुल्ल होने की प्रफुल्लता मानता हूं। प्रफुल्लजी सच में हम सबके सुधी साधक, लोकसंस्कृति संवाहक और साधो भाई ही हैं।

नेस्ले इंडिया व चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में गठबंधन

उदयपुर। उच्च गुणवत्तायुक्त एवं स्वच्छ पेय जल उपलब्ध कराने के लिए नेस्ले इंडिया ने राजस्थान सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ गठजोड़ किया है। इस साझेदारी के हिस्से के रुप में, नेस्ले इंडिया ने राजस्थान सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से कुल 10 पब्लिक हेल्थ सैंपल यूनिट्स को चिन्हित किया है, जहां पर कंपनी अपने एनजीओ पार्टनर पीरामल सर्वजल के माध्यम से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराएगी। डॉ. बी. आर. मीणा, निदेशक, जन स्वास्थ्य, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि यह सरकार द्वारा स्थापित आदर्श पब्लिक हेल्थ सेंटर योजना का हिस्सा होगा। सर्वजल सक्षम जल फिल्ट्रेशन एवं डिलीवरी मैकेनिज्म के साथ सिंगल फेज बोर-वेल्स एवं वाटर टैंक का निर्माण करेगा। राज्य सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग का उद्देश्य राज्य में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा सुविधा में सुधार करना है एवं इस दिशा में एक बेहद महत्वपूर्ण कदम स्वच्छ पेय जल की सुविधा को सशक्त बनाने में निहित है।

खोज-खबर

चित्तौड़गढ़ पर 'वीर प्रताप' का मंचन

पहले स्कूलों में अच्छे छोटे शिक्षाप्रद तथा बालक सुगमता से खेल सकें, ऐसे नाटकों का बड़ा अभाव था। अलबत्ता तो स्कूल ही नहीं थे। जहां कहीं स्कूल खुले तो अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ाने को उत्सुक नहीं थे।

मेवाड़ में कानोड़, मेरी जन्मभूमि में पं. उदय जैन ने यह स्वप्न देखा और 24 अक्टूबर 1940 को स्कूल खोला। इसमें मैं भी 8वीं तक पढ़ा। मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत भी 5वीं तक पढ़कर फिर मारवाड़ के कुचेरा जैन छात्रावास में चले गये। उनके साथ विपिन जारोली और सुरेन्द्र वया भी थे। विपिन तब बंशीलाल, सुरेन्द्र तब शंकरलाल और नरेन्द्र तब नाथूलाल नाम लिये थे। मेरा नाम भी मिठूलाल था। मुझे पढ़ाने वालों में प्रेमशंकरजी शर्मा, मांगीलालजी मल्हारा, अम्बालालजी नंदावत तथा मीठालालजी लसोड़ थे।

प्रेमशंकरजी इनमें अधिक अप्टूडेट रहते थे। धोती कमीज तो सभी पहनते पर वे पेंट बूट पहनते थे और छात्रों की बूट पहने पांवों से ही ठोकाठोकी करते थे। उनसे सभी भयग्रस्त रहते थे। मल्हाराजी ने मेरे बापदादों के गांवड़े, जो कानोड़ से 2 कोस अरनिया में था, वहां बड़ले के पास कोटड़ी में स्कूल खोला। इसके पास ही ठाकुरजी का मंदिर था और मेरा घर भी पास ही था। मल्हाराजी ने एकबार भजिया यानी पकौड़े की सब्जी बनाई। वे पकौड़े उन्होंने एक बड़े कटोरे में, खौलते पानी में निकाले तो मैं दंग रह गया। ये मल्हाराजी बाद में पुन: उदय जैन के स्कूल में पढ़ाने लगे और अंत तक वहीं रहे।

एकबार मैं स्कूल में एक समारोह में गया। उन्हें देखते ही मैंने उन्हें चरण-स्पर्श किया तो वे सकपकाकर पीछे हट गये। छात्र और शिक्षक सब देख रहे थे। वहीं पता चला कि वे चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं। तब प्रधानाध्यापक मोतीलाल डूंगरवाल थे जो मेरे साथ ही पढ़ते थे और बाद में हम बीकानेर कॉलेज में सहपाठी भी बने। उनको मैंने कहा कि मल्हाराजी अपने गुरुजी रहे हैं। इन्हें पुस्तकालय अध्यक्ष विपिनजी के साथ पुस्तपालकी बना दें।

पं. उदय जैन कई गुणों और विशेषताओं के धारक थे। वे कांग्रेसी थे, खद्दर पहनते थे। शरीर से भी और ज्ञान से भी तेजस्वी थे। बड़े स्फूर्तिवान, हंसमुख और गांव में सभी बच्चे शिक्षा लें, आगे बढ़ें, स्कूल का नाम भी रोशन करें और गांव की सब ओर पहचान बने, ऐसे धुन के धनी स्वप्नदर्शी थे। बड़े कठोर कर्मशील और जागरूक थे। स्वतंत्रता सेनानी थे और पं. नेहरू का प्रभाव लिये ओजस्वी वक्ता तथा कर्मठ हृदय थे।

स्कूल में शनिवार को विभिन्न प्रवृत्तियां प्रारंभ कर रखीं थीं। अध्ययन के साथ मेरी रुचि सभी प्रकार की साहित्यिक प्रवृत्तियों में थी। पहली कविता मैंने चौथी कक्षा में था तब लिखी। वार्षिक समारोह बड़े ठाठ से होता था। उसमें मैंने मोनो एक्टिंग में भोपे का भाव दिखाया। शरीर से कांपते, देवता का अवतरण दिखाते, धीरे-धीरे दो चार सांकलें भी पीठ पर ठोकीं और मयूर पंख का झाड़ू सामने बैठे दोस्त पर डाला।

मुझे इस प्रस्तुति में भरपूर सराहना मिली और वहां बैठे वकील सरदारसिंहजी ने मुझे रजत पदक दिया जो उस समारोह की और मेरी भी अति विशिष्ट उपलब्धि थी। यह पदक अभी भी मेरे पास अलभ्य यादगार बना हुआ है। एकबार कृष्ण-सुदामा नाटक खेला गया गांधी चौक में। कई दिनों तक रिहर्सल होती। पूरे गांव में उसकी चर्चा रहती। घर-घर जाकर पोशाकें इकट्ठी करते। माड़साब नंदलालजी रांका थे जो पहलीबार हारमोनियम लाये। वे सबको संगीत प्रस्तुति की रिहर्सल कराते। कृष्ण-सुदामा में मुझे सुदामा बनाया गया। कृष्ण माधवलाल धींग बने जो बाद में कम्पोण्डर हुए। यह नाटक भी उदय जैन ने लिखा था।

लेकिन असल याद तो मुझे वीर प्रताप नाटक की है। यह भी जैन साहब का ही लिखा था। इसका प्रथम बार मंचन चित्तौड़ के किले पर 8 फरवरी 1947 को हुआ। प्रसंग था जैन दिवाकर चौथमलजी महाराज की दीक्षा स्वर्ण जयंती का। वहां 25 हजार श्रावकों ने इसे देखा। वह सम्मेलन भी बड़ा अद्भुत था। गांव-गांव से भक्तों का उमड़ाव दर्शनीय था। नाटक खेलने वालों में डॉ. नरेन्द्र भानावत, विपिन जारोली, सुन्दर मुर्डिया, रतन लसोड़, कन्हैयालाल जारोली आदि थे। जैसा ऐतिहासिक सम्मेलन था वैसी ही ऐतिहासिक यादगार लिए इस नाटक की प्रस्तुति थी जो अनेक वर्षों तक चर्चा में रही।

यही नाटक 1952-53 में खेला गया। तब मैं 8वीं का विद्यार्थी था। मंचन से पन्द्रह दिन पहले से उसकी खूब रिहर्सल कराई जाती थी। पंडितजी इस नाटक के प्रत्येक शब्द, स्थल, संवाद का बड़ी कड़ी मेहनत से पूर्वाभ्यास कराते। किधर से आना, कैसे जनता के समक्ष मुखातिब होना, संवाद बोलना, कपड़े कैसे पहिनना, हाव-भाव व्यक्त करना आदि सबको स्वयं मंचित कर बताते। दो तीन बार पोशाक सहित संवाद रट लिये जाते। दूसरों के संवाद-कथन भी हमें याद रहते। गद्य-पद्य मिश्रित यह नाटक बड़ी मीठी चुस्क और चबौली स्थिति पैदा कर देता। सरसता और प्रवाही स्थिति हर समय हममें बनी रहती। यहां तक कि रात को नींद में वे ही संवाद उच्चरित कर सोने वाले को भी चौंका देते। सुबह मां कहती, रात को कैसे भुजा फड़फड़ाता नींद में वर-वर कर रहा था। मैं फिर वे ही पंक्तियां दुहराता और अपनी भुजा की तरफ देख दुश्मन को ललकारता। मां मुझे ऐसे चौकन्ना और बहादुर देख बड़ी खुश होती। जो पंक्तियां मुझे अब भी याद आ रही हैं, वे थीं-

अब तक तो मैं शांत था,
अब चढ़ गया जनून।
अब दुश्मन जाते कहां,
करूं खून का खून।।
तलवार चलाऊं जिधर,
उधर हो जाय सफाई।
धनुष उठाऊं जिधर,
उधर मच जाय दुहाई।।

वैसे युद्ध हमने कभी नहीं देखे पर इन संवाद-पंक्तियों से वीर रस का साक्षात् अवतरण कर रणस्थल का सारा दृश्य रणकंकणमय बना देते। मुझे क्या पता था कि 1971 में जब यह नाटक छपा तब मुझे ही इसका प्राक्कथन लिखने को कहा गया जो मैंने लिखा भी।

जीवन में हजारों अनेकानेक चीजें, प्रसंग, घटनाएं प्रत्येक के जीवन में घटती रहती हैं किन्तु वे महत्व वाली नहीं होती हुई भी महत्वपूर्ण होती हैं, इसका एहसास हर एक को नहीं रहता।

पगड़ी बांधक भगवानजी

सिर पर बांधी जाने वाली पगड़ी राजस्थान की बड़ी ख्यात रही है। मेवाड़ की पगड़ी के कई किस्से, कहावतें तथा उनकी बंधेज, बंधाई और ऊपर सुशोभित होने वाले कीमती आभूषण का भी अपना इतिहास रहा है। भरतपुर के निकट नोह की खुदाई में प्राप्त यक्ष प्रतिमा, रेढ़ की खुदाई से प्राप्त मृण प्रतिमाओं में पुरूष-स्त्री दोनों पगड़ी धारण किये मिलते हैं। यह काल ईस्वी सन् से 200 वर्ष पूर्व का कहा जाता है। बीकानेर के रंगमहल में तीसरी शताब्दी पूर्व की पगड़ियां आकर्षण का केन्द्र बनीं मैंने देखीं।

देश के अन्य प्रांतों यथा पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, बिहार, उत्तरप्रदेश में भी पगड़ियां खूब चलायमान हैं पर राजस्थान की बात ही हुछ और है।

मेवाड़ के महाराणाओं की तो पहचान ही पगड़ी बनीं। उन पर कोरकिनारी, पछेवड़ी, छोगा, लुमक के अलावा जो जेवर शोभित होते उनकी कीमत ही तब लाख-लाख की होती। अन्य कोई वैसी पगड़ी धारण नहीं कर सकता। कुछ महाराणाओं ने पहले से चली आ रही धारा से हटकर अपनी मनमरजी की पगड़ी, उसका बंधेज, बंधाई तथा भांत शुरू की जो उनके नाम से चली। जैसे महाराणा उदयसिंह के नाम से उदयशाही, अमरसिंह के नाम से अमरशाही, अरसीसिंह के नाम से अरसीशाही, भीमसिंह के नाम से भीमशाही, सरूपसिंह के नाम से सरूपशाही पगड़ी का चलन हुआ।

महाराणा भूपालसिंह को लहरिया बहुत पसंद था तो उनके नाम से भूपालशाही लहरिया लोकप्रिय हुआ। मेवाड़ में सौलह मुख्य तथा बत्तीस उप ठिकाने थे जो सौलह-बत्तीसी कहलाते थे। इन ठिकानों के शासक जागीरदार कहलाते थे।

इनमें से सलूम्बर, देवगढ़, कानोड़, बदनौर तथा भैंसरोड़गढ़ के प्रभावी ठिकानों के जागीरदारों ने अलग भांत की विशिष्ट पगड़ियां प्रारंभ कीं जो क्रमश: चूंडावतशाही, जसवंतशाही, मांडपशाही, राठौड़ी तथा मानशाही पगड़ी के नाम से जानी गई।

इन पगड़ियों के बांधने वाले अलग से नौकरी पाते थे। उदयपुर राजपरिवार से जुड़े पगड़ी बांधक भगवानजी (80) से मैंने उनके निवास गणेशघाटी पर 25 अगस्त 1979 को भेंट की। भगवानजी सभी तरह की पगड़ियां बांधने के कुशल कलाकार थे। भारतीय लोककला मण्डल में भी उनकी सेवायें ली गईं तब उनकी आयु कमर का झुकाव लिये थी।

धोती ऊपर कोट और पगड़ी उनका पहनावा था और पगड़ी में धागे सहित सुई खसोली रहती थी। उन्होंने महाराणा फतहसिंहजी, उनके उत्तराधिकारी महाराणा भूपालसिंहजी और अंतिम महाराणा भगवतसिंहजी की सेवामें रह पगड़ी बांधने का कार्य किया। उनके पास महाराणा की पगड़ी पर शोभित सभी तरह का जेवर भी रहता था। वे छाबदार के नाम से जाने जाते।

भगवानजी ने बताया कि तब पगड़ी आदमी की ओपमा और शान समझी जाती थी। सफेद पगड़ी शोक की सूचक थी। विविध उत्सव त्यौहार पर महाराणा की विशिष्ट पगड़ी होती। सवारी में उनके पीछे सदैव भगवानजी रहते। एकबार सवारी के दौरान महाराणा का पगड़ी का छल्ला ढीला हो गया तब उन्होंने तत्काल हाथी पर चढ़ सुई से टीप देकर उसे ठीक किया। हर समय उन्हें चौकन्ना और सजग रहना पड़ता था। शिकार जाते वक्त भी वे साथ रहते।

उन्होंने बताया कि पगड़ी बदल भाई होते। पांवों में पगड़ी रख प्रायश्चित किया जाता और झगड़ा मेटकर आपस में सुलह कराई जाती। दण्ड स्वरूप पंचों के पांवों में पगड़ी रख सिर झुकाया जाता। पगड़ी के साथ शादी होने और सती होने के कई प्रसंगों से इतिहास भरे पड़े हैं। भगवानजी के हाथों बंधी पगड़ियां कई जगह देश-विदेश के संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रही हैं। अकबर के आगे प्रताप की पगड़ी सदैव अनमी रही। जीमण में पगड़ी बंध नूते होते। औरतें पगड़ी पहन दुश्मनों पर टूट पड़तीं।

- म.भा.

एस्पायर होम फायनेंस का उदयपुर में परिचालन शुरू

उदयपुर। देश की एकमात्र राष्ट्रीय अफोर्डेबल हाउसिंग फायनेंस कम्पनी एस्पायर होम फायनेंस कॉरपोरेशन लि. (एएचएफसीएल) ने विशेष तौर पर निम्न और मध्यम आय (एलएमआई) की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राजस्थान में प्रवेश करने की घोषणा की है। इससे सरकार की 'वर्ष 2022 तक सभी को आवास' महत्वपूर्ण योजना को पूरा करने में योगदान दे सकेंगे। एएचएफसीएल ने उदयपुर में अपना कार्यालय न्यू फतेहपुरा, सुखाड़िया सर्किल में खोला है। इसके शाखा प्रबन्धक सुनील शर्मा है।

उदयपुर शाखा का उद्घाटन कल्पेश ओझा, सीएफओ, एएचएफसीएल एवं अमित सरीन, राजस्थान स्टेट हेड, एएचएफसीएल द्वारा किया गया। इस दौरान उदयपुर में एएचएफसीएल के प्रथम ग्राहक को पहला चेक भी सौंपा गया। कल्पेश ओझा के अनुसार केन्द्र सरकार अपनी फ्लेगशिप योजना प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) के तहत 90 मिलियन मकान 'वर्ष 2022 तक सभी के लिए आवास' मिशन के तहत सौंपने का है। एएचएफसीएल इनमें से एक पहली हाउसिंग फायनेंस कम्पनी है जो प्राथमिक रूप से पीएमएवाई योजना के तहत ऋण उपलब्ध करवा रही है। यह कम्पनी स्थाई एवं बड़ा पोर्टफोलियो बनाना चाहती है और राष्ट्रीय निर्माण अभ्यास का एक हिस्सा बनना चाहती है।

सामुदायिक भवन एवं पंचफल उद्यान का उद्घाटन

उदयपुर। वण्डर सीमेण्ट लि. द्वारा संचालित सी.एस.आर. गतिविधियों के अन्तर्गत पंचायत समिति, निम्बाहेड़ा की ग्राम पंचायत - फलवा में नव निर्मित 'सामुदायिक भवन' एवं ग्राम धनोरा में वण्डर सीमेण्ट की सहभागिता से विकसित 'पंचफल उद्यान' के द्वितीय चरण का उद्घाटन स्वायत्त शासन एवं नगरीय विकास, आवासन मंत्री, राजस्थान सरकार, श्रीचंद कृपलानी, वण्डर सीमेण्ट के अध्यक्ष शशिमोहन जोशी एवं सहायक उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्री कृपलानी ने कहा कि निम्बाहेड़ा क्षेत्र में वण्डर सीमेण्ट द्वारा सी.एस.आर. गतिविधियों के अन्तर्गत किये जा रहे सामुदायिक विकास के कार्यों के लिये प्रशंसा की तथा फलवा ग्राम में निर्मित सामूदायिक भवन का निरीक्षण करते हुए भवन के निर्माण एवं गुणवत्ता पर हर्ष जताया और कहा की आधुनिक सूविधाओं युक्त इस भवन का उपयोग ग्रामवासी सामाजिक समारोह के लिये कर सकेंगे।

इस दौरान श्री कृपलानी ने वण्डर सीमेण्ट के शशिमोहन जोशी को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक अशोक नवलखा, डेयरी चेयरमेन बद्रीलाल जाट, उपखण्ड अधिकारी हेमेन्द्र नागर, सरपंच, ग्राम पंचायत फलवा शम्भूलाल जाट, सहित वण्डर सीमेण्ट के अधिकारीगण, पंचायत समिति निम्बाहेड़ा के सामाजिक कार्यकर्ता, पंचायत राज संस्थाओं से जुड़े जनप्रतिधि, अधिकारीगण एवं ग्रामवासी उपस्थित थे।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 फरवरी 2017

सम्पादकीय

अनाम नाम

यूं तो कोई अपने जाये का नाम कुछ भी रखे, किसी को क्या लेना देना मगर लोग कहां मानने वाले हैं। जो बात ठीक नहीं लगती उसे कहे बिना नहीं रहेंगे। अब देखिये न, करीना कपूर ने अपने बेटे का नाम तैमूर अलीखां रख दिया तो लोगों को यह नाम खटकने लगा। तैमूर नाम का व्यक्ति इतिहासबद्ध है जो हिन्दुस्तान पर आक्रांता बनकर आया था। वैसे नामकरण का एक पूरा संस्कार है हिन्दू संस्कृति में मुख्य सौलह संस्कारों में। यहां तो गर्भाधान तक का संस्कार है। माना जाता है कि जिस मौके पर जो उल्लासोत्सव आयोजित किया जाता है उसका सब पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

नाम मांगलिक होता है तो घर में सबकुछ मांगलिक होता है। इसीलिए तो पहली लड़की का नाम सोवनी, मोवनी अर्थात् सुहावनी, मोहित करनी और आवश्यकता से अधिक होने पर धापू, अणचाई अर्थात् अनचाही और यहां तक कि रोड़ी या फिर बगदी तक रख दिया जाता है। राम का नाम हर गांव में मिलेगा। कंस का, रावण का कहीं सुना नहीं गया। कैकयी का, मंथरा का नाम भी नहीं सुना गया। लोग तो कहते हैं कि मीरां और शकुन्तला नाम भी कोई सुख देने वाले नहीं हैं। जो समाज तथा जनजीवन में आदर्शवान बने हुए हैं उनका जीवन, चरित्र तथा उनके द्वारा करणीय काम, नाम, ठाम भी आदर्शमूलक होने चाहिएं।

पत्र-पिटारी

देखते ही देखते एक वर्ष पूरा हो गया। इस एक वर्ष में 'शब्द रंजन' ने जो 'बारमासा' रचा-गढ़ा है वह कालजयी साहित्य का इतिहास बनेगा। स्थायी स्तंभ 'स्मृतियों के शिखर' में राजस्थान के भूले-बिसरे नींव के पत्थरों का स्मरण और पुन: प्रतिष्ठा, कान्यो-मान्यो का स्वस्थ किन्तु चुटीला हास्य-बोध अविस्मरणीय रहेंगे। साहित्य की सभी विधाओं से सजा-धजा शब्द रंजन अपने एक वर्ष के परिश्रम से तैयार सिंहासन पर बिराजमान है। इस पहले मील के पत्थर पर उसने अपनी संपादिका श्रीमती रंजना भानावत को 'संपादकश्री' के सम्मान का आशीर्वाद दिया है। एतदर्थ, आप सभी को बधाइयां ! उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ! **-डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, उदयपुर**

नुंवो बरस बंदन करां, जंघी ढोल बजाण।
गावो हेळी गीतड़ा, लेस्यां कळस बंदाण।।
यो छ: मूंघो पामणो, कई सतकार करांह।
पलकां पग मंडणा करां, हिय रा नजराणाह।।
नुवो साल आयो कई, जण जण उमङ्यो नेह।
सोना रो सूरज उगो, दूधां वूठो मेह।।
मूंडा सह मीठा करां, आज कस्या घाटाह।
भेल्यां, भेल्यां गोळ री, बोर्यां पतायां बांटाह।।
मती सुणाजे वाहरु, मत अणवाका बोल।
श्रवणा सदा सुणावजे, घर-घर मांगळे ढोल।।

-प्रो. देवकर्ण सिंह, रूपाहेली

'शब्द रंजन' नियमित मिल रहा है। इसमें मैं 'स्मृतियों के शिखर' तथा लेख, टिप्पणियां बेहद दिलचस्पी से पढ़ता हूं। आपकी प्रवाहबद्ध लेखनी में देशी, स्थानीय, आंचलिक और क्षेत्रीय शब्दों का अनूठा प्रयोग आकर्षित करता है। अभी परसों ही जनवरी 2017 (प्रथम) का अंक मिला। इसमें 'रसवंती कलाओं के कीर्ति-कौस्तुभ डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी' विषयक आलेख मजेदार और प्रेरणादायी है। इस आलेख से पता चला कि डॉ. सिंघवी जैसे विश्व विख्यात मनीषीप्रवर ने भारतीय लोककला मंडल में शीर्ष पद को सुशोभित किया। मुखपृष्ठ पर श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत के बारे में जानने को मिला। 'शब्द रंजन' के जरिये आपकी यादों का पिटारा खुलता जा रहा है। आपकी स्मृतियों में न जाने कितनी जानी-अनजानी, सुलभ-दुर्लभ ज्ञान पोटलियां बंधी पड़ी हैं। संस्कृति और लोक-संस्कृति के अलावा इनका साहित्यिक और ऐतिहासिक महत्व भी है। **-डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई**

इस बात से आज शायद कोई इंकार नहीं कर सकता कि हमारा समाज जैसे-जैसे भौतिकतावाद बढ़ रहा है वैसे-वैसे ही वह सांस्कृतिक रूप से अधिकाधिक दरिद्र होता जा रहा है। इस सांस्कृतिक दरिद्रता का एक बड़ा खतरा यह भी है कि मानव जीवन से सम्बंधित समझदारी की जितनी बातें लोकोक्तियों, लोक-कथाओं, लोक-गीतों आदि के माध्यम से व्यक्त होकर आम आदमी का मार्ग-दर्शन किया करती थीं उन तमाम बातों से भी अब हमारा समाज वंचित होकर अधिकाधिक पतन की ओर बढ़ रहा है ।

सांस्कृतिक संकट के ऐसे समय में 'शब्द रंजन' का प्रकाशन निश्चय ही एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आवश्यकता की पूर्ति करता है। इस पाक्षिक को अनुपाणित करने वाले डॉ. महेन्द्र भानावत उन दुर्लभ व्यक्तित्वों में से हैं जिनका मन अपने लोक और अपनी संस्कृति में अब भी खूब रमता है। वे आज भी उन किस्से-कहानियों और लोककथाओं की खोज में बड़े उत्साह से लगे रहते हैं जो विज्ञान और तार्किकता के हमारे युग में लोगों को अविश्वसनीय और कपोल-कल्पित लगती हैं। वे अब भी उस रचनात्मक संसार को जीवित रखे हुए हैं जो भौतिक वस्तुओं से नहीं बल्कि ज़मीन से जुड़े लोगों की कल्पना और सृजनात्मकता से निर्मित होता है। इस पाक्षिक में समय-समय पर प्रकाशित होने वाले लेख हमें उन समर्पित संस्कृतिकर्मियों से परिचित करवाते हैं जिन्होंने अपना समूचा जीवन समाज और संस्कृति को देकर भी बदले में कुछ नहीं मांगा। हमारे मुनाफाखोर समय में जबकि लोग अपने हर सम्बन्ध को भुनाने के फेर में रहते हैं, ये लेख नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन का काम कर सकते हैं। **-सदाशिव श्रोत्रिय, नाथद्वारा**

दाम्पत्य जीवन में प्रवेश पर नव दंपत्ति को शुभकामनाएं

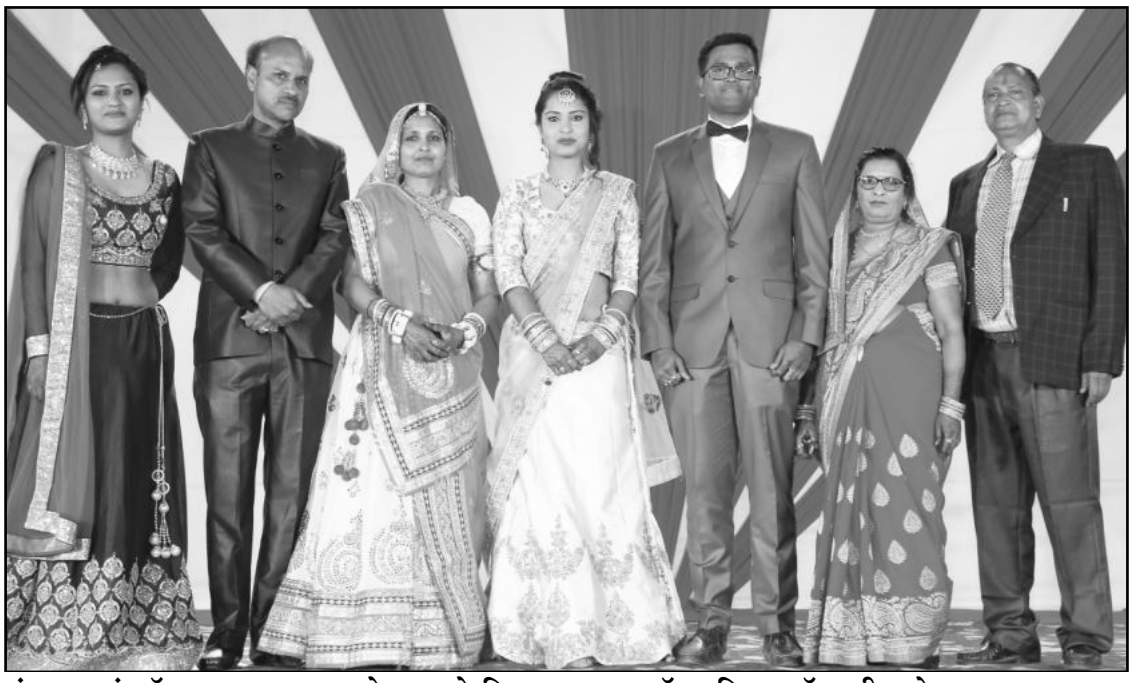

रंजना एवं डॉ. तुक्तक भानावत के भानजे विकल्प सुपुत्र डॉ. कविता-डॉ. सतीश मेहता का उदयपुर में शुभ विवाह सौ. अनिशा सुपुत्री सुनीता-श्री राकेशजी बैंगानी के साथ 20 जनवरी 2017 को बड़े हर्षोल्लास एवं विधिविधान के साथ सम्पन्न हुआ। शब्द रंजन परिवार की ओर से नव दम्पत्ति को हार्दिक बधाई।

डॉ. संजीव भानावत, राजीव भानावत, डॉ. कहानी भानावत, रंजना एवं डॉ. तुक्तक भानावत अग्रजा डॉ. कविता को विवाह पूर्व मायरा झेलाता मामा परिवार।

विवाहोपरांत विकल्प एवं अनिशा को आशीर्वाद प्रदान करती हुई दादी प्रेमबाईजी।

महेन्द्र भाई की किताबें पढ़ते हुए

-डॉ. प्रयाग जोशी-

महेन्द्र भाई की किताबों को पढ़ते हुए, लोककलाओं से संबंधित कितनी ही बातें ध्यान में आती-जाती हैं। उनके समकालीन राजस्थान में अनेक नामचीन व्यक्तियों पर लिखे गये लेखों के संकलन की किताब 'जिन्हें मैं जानता हूं' में उन्होंने देवीलाल सामर, अगरचन्द नाहटा और डॉ. सत्येन्द्र जैसे मनीषी-व्यक्तियों की सफलता के निगूढ़ तन्तुओं का अन्वेषण किया है। कइयों की दैनंदिन व्यवहार की ऐसी वृत्तियां भी उद्घाटित कर दी हैं जिनका खुलासा करने से लोग प्राय: अपने को बचते हैं।

व्यावहारिक लोग, बड़े प्रभावशाली पदों पर विराजमान लोगों की प्रशंसा में ही कलम चलाते हैं। भानावतजी ने गुणों की सराहना की है परन्तु उनके अखाड़ेबाजी, उठापटक और दावपेचों के साथ अपने चहेतों के लिए मानदंडों की परवाह न करने और स्वार्थपरता में संलिप्ति को भी रेखांकित करने से नहीं चुके हैं।

कुछ स्थलों पर तो ऐसे बेवाक् हुए हैं कि उन महानुभावों के अन्तेवासी पढ़ें तो तिलमिला उठें। ऐसे प्रसंगों से लेखक के मुंहफट स्वभाव और खरेपन की पहचान होती है। उस किताब में, मेवाड़ के राणा फतहसिंह और भूपालसिंह की शिकार-यात्राओं के संचालन के सहयोगी रहे तुलसीनाथ धायभाई और देशभक्त डाकू करणा भील की अनूठी रेखा चित्रोपम-स्मृतियां हैं तो पड़ चित्रकारी व लोकमंच के कलाकार श्रीलाल व गोवर्द्धनदास के प्राक्कथनात्मक लेखों से लेखक की लेखनशैली में झलकते वैविध्य का अंदाज भी होता है और विषय-वस्तुओं के चयन में बरती गई स्वायत्तता भी देखने को मिलती है। भानावतजी मुझे लिक्खाड़ तो नहीं लगते परन्तु जिस विषय पर लिखना प्रासंगिक समझते हैं उस पर उनकी लेखनी लिखने से चूकती भी नहीं है।

भक्त कवयित्री मीरांबाई पर उन्होंने 'निर्भय मीरां' शीर्षक से किताब लिखी है। यह किताब एक ओर उसके कवयन कर्म को आनुसंगिक किंवा उस पर आरोपित किया गया विशेषण मानने की आग्रही है तो दूसरी ओर कवियों के जीवन-चरित लिखने की रूढ़ परिपाटी को तोड़ती भी है। 'मीरां' शब्द को 'आलौकिकता' के अर्थ में लेकर उन्होंने सिद्ध किया है कि स्वभाव की नैसर्गिकता और व्यवहार की स्वच्छंदता में वह दरबारी दुनियादारी के ढर्रे में न ढल सकने वाली स्त्री थी। शेरनी के दूध और खरगोश का रक्त संचरित था उसकी धमनियों में।

मीरां शब्द को विशेष्य और निर्भय को विशेषण मानकर, लोकमान्यताओं के आधार पर उन्होंने मीरां के बारे में बहुत सी नयी सूचनाएं दी हैं। निर्भय शब्द को चुनने के प्रयोजन में उनके सामने भगवान शंकर के 'निर्भयनाथ' विग्रह के प्रति मीरांबाई के पति भोजराज की एकवान भक्ति का साक्ष्य है। यह साक्ष्य उतना ही लोक विश्रुत और पुरातत्व-सिद्ध है जितना मीरांबाई का 'शालिग्राम' रूप में श्रीकृष्ण के प्रति भगवदाशक्ति व पूजानुष्ठान का भाव है।

चित्तौड़गढ़ के भीतर मीरांबाई के शालिग्राम-स्वरूप 'विष्णु' और भोजराज के निर्भयनाथ 'शिव' के मंदिरों से यह बात पुष्ट होती है कि पति-पत्नी दोनों की अपने-अपने इष्टों के प्रति स्वतंत्र परन्तु निरपेक्ष पूजाशक्ति थी। पृथक-पृथक 'इष्टों' के प्रति यह आसक्ति उनके 19 वर्षों के वैवाहिक जीवन की अन्योन्यता में कभी अवरोधक नहीं बनी। निर्भय सत्व मीरां ने पति की सन्निधि से पाया। इसी से वह, उनकी मृत्यु के दो वर्ष बाद दुर्ग की प्राचीरों से बाहर निकली और निडर होकर बयालीस वर्षों तक देशभर में घूमती रही जबकि भोजराज के भाई राणा रतनसिंह ने जीवनभर उन्हें प्रताड़नाएं दीं। भानावतजी को मीरांबाई के जन्मस्थान, बाल्यकाल, राणा सांगा के खानदान में ब्याही जाने और भोजराज व उसके निजी सम्बंधों के विस्तार में जाना अभिप्रेत नहीं है तथापि हेडलाइनों में जीवन के उक्त घटनाक्रमों पर संक्षिप्त टीपें दे दी हैं। लेखक का सारा ध्यान मीरां के वापस घर न आने के संकल्प से, घर से निकल पड़ने से है।

महाराणाओं की आन, बान, शान और राजपूती मान-मर्यादाओं को ठेंगा दिखाकर महल-अट्टालिकाओं की सीमाओं को लांघती हुई मीरां है वह। मीरांबाई जो रोहिड़े-रैदास को पथ-प्रदर्शक गुरु बनाकर उसी के साथ रमती राम जोगिन बनकर भक्ति के लोकपथ पर चली और कालजयी बनी। उस मीरां को डॉ. महेन्द्र भानावत ने कवयित्री नहीं अपितु साक्षात् देहधारी कवितावतार माना है। विद्रोह की सांसों से स्त्री-जीवन के कागज पर लिखी हुई कविता है मीरां। वह जिन-जिन रास्तों से होकर जिन-जिन गंतव्यों पर जीवन के बयालीस वर्षों तक ठहरती चलती गई, उन्हीं रास्तों का संधान करते हुए, उन्हीं पड़ावों की तीर्थयात्रा पर निकले हैं भानावत भाई। यह वह तीर्थयात्रा है जिसमें हिन्दू दर्शन, भाग्वद के महात्मा विदुर की भांति जीवन में कम से कम एक बार अवश्य निकलने की सलाह देता रहा है। भक्तिशास्त्र में मनुष्य योनि की सार्थकता ही इसी पंथ पर चलने में है अन्यथा चौपाये ही भले हैं जिनको पापाचरण करते किसी ने नहीं देखा है।

मीरांबाई की यह यात्रा डाकोर से चलकर वीरपुर, गिरनार, अम्बाजी, शामलाजी, मथुरा, सोमनाथ, हरसिद्धि, पंढरपुर, नासिक, मांडू, उज्जैन, रामेश्वरम्, काशी-अयोध्या, गया, वृन्दावन से द्वारका तक की है जहां वह 'नील सरोरुह-श्याम सदृश' समुद्र में लीन हो जाती है। भक्ति पथ का सारुप्य है यह। इस पथ में जाति, वर्ण, लिंग, व्यवसाय, राजा, रंक यहां तक कि जैवी भेद भी मिट जाते हैं। कुल बयालीस वर्ष के उत्तरार्द्ध की 'वीतरागी-विराग' मीरां की 'राग-रस-रंग-राची' यात्रा है यह। इस यात्राकाल की मीरां, लेखक को कवयित्री नहीं 'रागानुगा' स्त्री लगती है।

इन यात्राओं में वह क्या खाती होगी, कैसे रहती होगी, रातों में स्त्री-शरीर के साथ जुड़ी मर्यादाओं को निभाती होगी जबकि राणा रतनसिंह के खोजी उसकी जिन्दा या मरी हुई देह को किसी भी सूरत पर चित्तौड़ ले आने के लिए देशभर में फैले हुए थे।

चमार जाति के रैदास-गुरु के भाग्वद धर्म के सर्वस्व की पताका फहराती हुई मीरां के जीवन के यथार्थ को जानने की तीव्र उत्कण्ठा से महेन्द्र भानावत भी निकले हैं। उसी के रास्तों पर चलते हुए वे लोकवार्ताओं में मौजूद चिरंतन मीरां को ढूंढ़ रहे हैं। सात वर्षों की उस सुदीर्घ यात्रा में वे मीरां के काव्य-रचनाओं के उस 'पाठ' से प्रेरित होकर नहीं चले हैं जो हमारे पाठ्यक्रमों में पढ़ाया जाता रहा है।

वे लोक प्रचलित ख्यातों, विगतों, वात-वार्ताओं, हकीकतों, बहियों, हालों, अलौकिक कथनों, वृतान्तों, दन्तकथाओं, बड़वे भाटों की विरुदावलियों, वंशावलियों, बरमौ और राग भागों को दस्तावेज की तरह लेते हैं और लोक-प्रसिद्धियों में उड़ती उन 'हवाओं' को शब्द देते हैं जिनका ऐतिहासिक सन्-संवतों में उल्लेख नहीं रहता।

लौकिक भावनाओं में ढूंढते हैं वे मीरां को। कविताओं की विषयवस्तु में नहीं अंटती वह। उसी भावधारा में बहते हुए वे लिखते हैं- 'मीरां ने कविताएं लिखी ही नहीं।' यह लिखना कागज के पृष्ठों पर घास की कलम का लिखना है। मीरां ने जो कविताएं लिखीं वे जीवन की कलम से समय की शिला पर लिखीं और लोक ने उसी भांति उन्हें गाया जैसे लोकगीतों का गायन करता रहा है वह।

भानावतजी का कहना सही है कि 'तुलसी, सूर और मीरां में एक ही समानता दिखती है कि तीनों ने किसी चुभती हुई डांट-फटकार से अपना घर छोड़ा। जहां तक कविताकारी का सवाल है अंधे होने के कारण सूर सूरदास कहलाये। वे स्वर के सहारे चलते थे और अच्छा गाते थे। लिखा कभी नहीं। लिखा कभी कबीर ने भी नहीं। मीरां ने तो न कभी गाया न लिखा ही। रैदास ने बहुत गाया। उसका गाया कौन लिखता। वह तो अछूत चमार जो था। उसके नाम से लोग लिखते रहे।'

बिना लिखे ही चलने वाली यह विराट परिपाटी 'लोक' की है। हमें लगता है मीरां ने लिखा भले ही न हो, गाया जरूर होगा। भानावतजी का उक्त कथन इस आधार पर है कि सर्व साधारण जनों को श्रद्धा-भक्ति की सहज-नैषर्गिक अभिव्यक्ति लोकगायन की देशी-शैलियों में होती रही है। जोगी, मिरासी, सपेरे, ढोली, साधु-संत जनों के साथ लोकमनस का तादात्म्य भाव रहता रहा है। उनकी रचनाएं लोकानुरंजन ही नहीं करतीं, भक्तिभाव की सततता को भी बनाए रखती हैं।

लोक-कपोल का मनोविज्ञान जटिल होता है। उसमें इतिहास-काल तिरोहित रहता है। भक्ति के लौकिक धरातल पर रहस्य, रोमांच, असमंजस, तिलिस्म सब मिलते जाते हैं। समय के 'आवर्ती काल से' ये चीजें 'मिथक' बनकर सनातन-समय में आती हैं। सनातन कभी अतीत नहीं होता। न ही वह व्यतीत होता है। फेंण्टेसी यह कि इतिहास-काल, समय के हर नूतन को भी सनातन में समाहित करता जाता है। सनातन समय में मीरां भोजराज के साथ सात-सात जन्मों तक सदेह घूमती देखी जाती है तो संत रैदास के दिये हुए तम्बूरे पर गाती हुई भी।

सनातन समय में शिवाजी और औरंगजेब होते हैं तो दत्तात्रेय और भगवान शंकर भी। भतृहरि-गोपीचन्द और गोरखनाथ होते हैं तो रामानंद, जीव गोस्वामी, रसखान और नरसी मेहता भी। शरीरों पर उतरने वाली दिव्य आत्माएं व भूत-पिशाच होते हैं तो लोकदेवता कल्लाजी भी होते हैं, मीरांबाई जिनकी बुआ लगती थी। यह है सनातन समय का करिश्मा कि मंदिरों, अखाड़ों, तीर्थों के बारे में कैसे-कैसे चमत्कार सुनने में आते हैं। लोक के ऐसे अजूबे समय में भानावतजी ने इतिहास समय के तथ्य भी ढूंढ़े हैं।

तथ्यों में से झांकती सत्य की झांई ऐसी मिलती है कि दादा दूदा की मृत्यु पर मीरां अपने मायके मेड़ता गई हुई थी। लौटी तो उसने सुना निर्भयनाथजी की खाड़ी में कोई पहुंचा हुआ साधु डेरा डाले हुए है। दासियों से उसे खबर मिली कि वह संत रोहिड़ा है।

रोहिड़ा, रैदास का लोक प्रचलित नाम था। तीसरे दिन मीरां रैदास से मिली और सातवें दिन उसके साथ महल छोड़कर निकल पड़ी। ये वे रैदास थे जिन्होंने संतपन में भी जातिगत धंधा नहीं छोड़ा था। रैदास प्रतिदिन बस्ती में जाकर सीवणी का धंधा करते थे। कभी-कभी चमड़े की गठरी अपने सिर पर उठा लाते तब मीरां भी उन्हें हर तरह का सहयोग करती। चमड़ा धोती, कूटती और रातोंरात जूतियां तैयार की जाती थीं।

वह कभी बनजारों की तरह रहती रही होगी। खुले आसमान के नीचे खाली पड़े हुए स्थान पर, चारों ओर पत्थरों से घेरकर बाड़ा बनाकर। कोई खाली छप्पर अथवा झोंपड़ी मिल गई तो उसी को डेरा बना लिया। दरवाजे पर आड़ी-टेढ़ी लकड़ियां रख दीं। चोरों, डाकुओं और हिसंक पशुओं से भी उसे खौफ नहीं था।

मीरां कभी संत गुणवंतदास रामानंदी के अखाड़े में रही तो कभी काशी नरेश की मेहमान। कभी जलाराम से मिलने पैरों से चलकर गई तो कभी भूलेश्वर जैसे हवेली के मंदिर से उसकी अगवानी को पालकी भी आई। अयोध्या में, मीरां ने अपनी माता के फूल विसर्जित किये थे।

उदयसिंह मेवाड़ के राजा बने तो उन्होंने मीरां को चित्तौड़ बुलाना चाहा था। एक ब्राह्मण के साथ दो राजपूत सरदारों को उन्होंने मीरां की ढूंढ़ में लगाया था जिन्होंने द्वारिका के समुद्र नारायण मंदिर में मीरांबाई को खोज निकाला और उससे चित्तौड़ लौटने का आग्रह किया। मीरां ने वापस चित्तौड़ लौटने की बजाय प्राणों का त्याग कर देना उचित समझा और उसी मंदिर की दांयी ओर समुद्र में कूद पड़ी। कूदते समय वहां पड़े पत्थर पर उसकी साड़ी का पल्लू फटकर उलझ गया। उस पल्लू से मीरां के प्राणान्त की सिनाख्त हुई थी।

ब्राह्मण की अगुवाई में सरदारों ने समुद्र के किनारे बनी एक झोंपड़ी में रैदास-संत की बरामदी की। उन्होंने उस संत की गर्दन काट डाली। धड़ भाग समुद्र के हवाले किया और मीरांबाई के इकतारे के साथ रोहिड़े-रैदास की गर्दन को लेकर चित्तौड़ लौट आए। भानावतजी की खोज में यही निष्कर्ष हैं।

गृहमंत्री कटारिया ने किया ध्वजारोहण

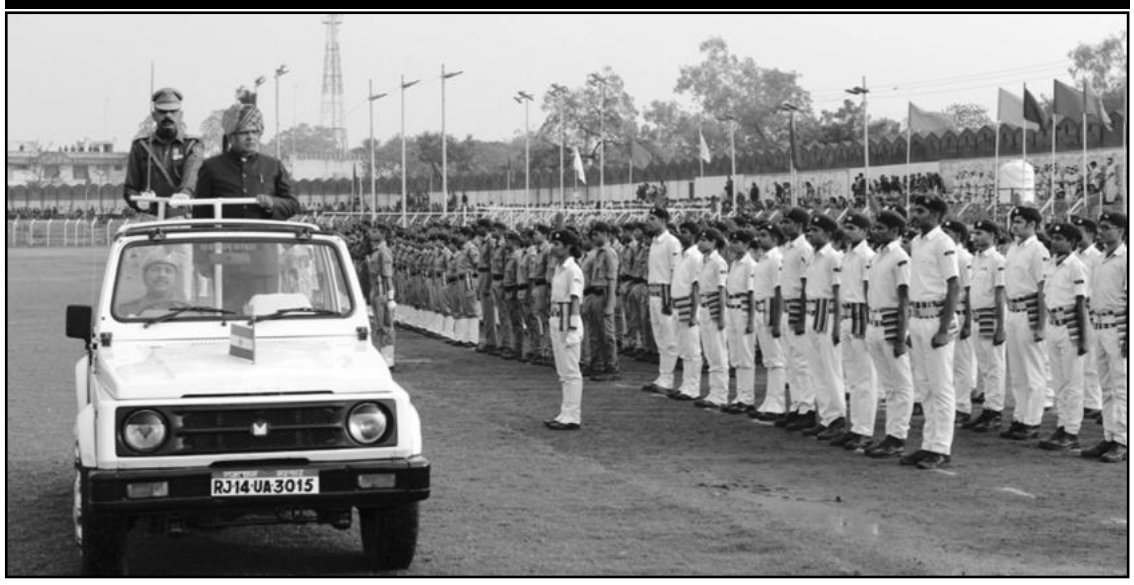

उदयपुर। उदयपुर के गणतंत्र दिवस संभाग स्तरीय समारोह में गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया और परेड का निरीक्षण कर मार्च पास्ट की सलामी ली। उन्होंने देवास परियोजना को शहर के लिए जीवन रेखा बताते हुए इसे पूरा करने हेतु राज्य सरकार की प्रतिबद्धता जताई। जनता का आभार जताते हुए उन्होंने कहा कि राय शुमारी में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने से उदयपुर का स्मार्ट सिटी योजना के तहत चयन हो सका।

इस योजना में शहर को स्मार्ट बनाने के लिए 1200 करोड़ रुपये का प्रावधान है। अमृत योजना में भी शहर को 274 करोड़ रुपये प्राप्त हुए हैं। आयड़ नदी के विकास हेतु 200 करोड़ तथा एलिवेटेड रोड के लिए बजट देकर सरकार ने शहर के विकास में कोई कसर नहीं छोडी है। इस अवसर पर उन्होंने शैक्षणिक, सामाजिक, लोकसेवा सहित अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए 96 जनों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। अतिरिक्त जिला कलक्टर (प्रशासन) सी.आर.देवासी ने माननीय राज्यपाल द्वारा आमजन के नाम दिये गये संदेश का पठन किया।

इस मौके पर परेड़ कमाण्डर पुलिस निरीक्षक विक्रम सिंह के नेतृत्व 18 विभिन्न टुकड़ियों ने परेड में भाग लिया एवं मार्च पास्ट की सलामी दी। मूक-बधिर उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने व्यायाम प्रदर्शन में हैरतंगजे प्रदर्शन किये।

सेन्ट्रल अकेडमी सरदारपुरा के छात्र-छात्राओं ने संगीतमय नृत्य की प्रस्तुति दी। नौ विभिन्न विभागों द्वारा उनके अधीन चलाई जा रही विकास योजनाओं, फ्लैगशिप कार्यक्रम एवं उपलब्धिपरक गतिविधियों की आकर्षक झांकियों का प्रदर्शन किया गया।

झांकियों में भारत स्काउट एवं गाइड की झांकी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि नगर विकास प्रन्यास व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने संयुक्त द्वितीय तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की झांकी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हिन्दुस्तान जिंक़ में ध्वजारोहण

उदयपुर। गणतंत्र दिवस पर हिन्दुस्तान जिंक़ के प्रधान कार्यालय के प्रांगण में कम्पनी सेकेट्री राजेन्द्र पण्डवाल ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। इस अवसर पर हिंदजिंक परिवार के बच्चों ने कविता, संगीत एवं देश-भक्ति गीतों की प्रस्तुतियां दी। कंपनी की सभी इकाइयों में गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया।

विद्यापीठ विवि में ध्वजारोहण

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के उदयपुर, डबोक, झाड़ोल, अजमेर एवं विद्यापीठ के समस्त केन्द्रों पर गणतंत्र दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रतापनगर स्थित मैदान पर आयोजित मुख्य समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने ध्वजारोहण किया और मार्च पास्ट की सलामी ली। विशिष्ठ अतिथि कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर एवं प्रो. सीपी अग्रवाल थे।

इस दौरान प्रो. सारंगदेवोत ने प्रस्तुतियां में सर्वश्रेष्ठ रहे छात्र छात्राओं को सम्मानित किया। संचालन डॉ. धीरज जोशी जबकि धन्यवाद प्रो. सीपी अग्रवाल ने दिया।

नारायण सेवा संस्थान में ध्वजारोहण

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के हिरण मगरी सेक्टर 4 के मानव मंदिर में संस्थापक कैलाश मानव, सेवाधाम में श्रीमती कमला देवी अग्रवाल, अंकुर कॉम्पलेक्स मे प्रशांत अग्रवाल, सेवामहातीर्थ बड़ी में डॉ. ए.एस. चुण्डावत तथा सेवा परमो धर्म ट्रस्ट के अपना घर में श्रीमती वंदना अग्रवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। मानव मंदिर प्रांगण में आयोजित समारोह में दिव्यांग, प्रज्ञाचक्षु, एवं मूक बधिर विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक एवं जिम्नास्टिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में निदेशक देवेन्द्र चौबीसा, जगदीश आर्य, सोहनलाल पूर्बिया, डॉ. ओ. डी. माथुर, राकेश शर्मा, सत्येन्द्र जैन भी उपस्थित थे। संयोजन महिम जैन ने किया।

पीएमसीएच में ध्वजारोहण

उदयपुर। भीलो का बेदला स्थित पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पीटल में गणतंत्र दिवस पर आयोजित समारोह में पेसिफिक मेडिकल विश्वविद्यालय के वाइस चॉसलर डॉ. डी. पी. अग्रवाल ने झण्डारोहण किया। कार्यक्रम के दौरान एमबीबीएस एवं डेन्टल के विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत सास्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां। समापन में संस्थान के चेयरमैन राहुल अग्रवाल एवं प्रीति अग्रवाल ने विद्यार्थियो को पारितोषिक वितरित किए। इस मौके पर पीएमसीएच के एडीशनल प्रिसिंपल डॉ. पी. सी. जैन, मेडीकल सुप्रिडेन्ट डॉ. एम. सी. बंसल, विभागाध्यक्ष सहित समस्त स्टाफ उपस्थित था।

पीआईएमएस में ध्वजारोहण

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईन्सेज हॉस्पिटल उमरड़ा में गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में पीआईएमएस के वाइस चैयरमैन आशीष अग्रवाल, डीन डॉ. ए. पी. गुप्ता सहित हॉस्पिटल के कई चिकित्साधिकारी मौजूद थे।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

ट्रक रेसर की प्रशिक्षण और चयन प्रक्रिया शुरू

उदयपुर। टाटा मोटर्स ने अपने ट्रक ड्राइवर रेस चयन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम- टी1 रेसर प्रोग्राम (टीआरपी 2.0) के दूसरे संस्करण की घोषणा की। ड्राइवरों को वाणिज्यिक वाहन के पेशे में शामिल करने के लिए टी1

रेसर कार्यक्रम चुने गए भारतीय ट्रक ड्राइवरों के लिए टी1 ट्रक रेसिंग चैंपियनशिप के सीज़न-4 में प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्रदान करेगा। इस रेसिंग चैंपियनशिप का आयोजन भारत के वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित एफ1 रेस ट्रैक बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट (बीआईसी) ग्रेटर नोएडा में किया जाएगा। इस अवसर पर टाटा मोटर्स के उपाध्यक्ष कॉमर्शियल व्हीकल्स आर. टी. वासन ने कहा कि टीआरपी प्रशिक्षण के प्रारूप को अनूठे तरीके से डिज़ाइन किया गया है, क्योंकि इसमें ऐसे ड्राइवरों को रेस कुशलता के प्रशिक्षण से लैस करना है, जिनके पास ट्रैक ड्राइविंग का पहले अनुभव नहीं रहा है। इनमें से कई ऐसे भी हो सकते हैं, जिन्होंने पहले कभी प्राइमा को नहीं चलाया हो और औपचारिक शिक्षा कम हो या नहीं ली हो।

ऐसे में पाठ्यक्रम की सामग्री को ड्राइवरों के अनुकूल बनाई गई है, ताकि इसे सभी ड्राइवर आसानी से समझ सकें, वह भी काफी कम समय में। मोमा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को तैयार किया है।

'फेनेस्टा' शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर। भारत की सबसे बड़ी विन्डो कम्पनी एवं डीसीएम श्रीराम लि. का एक प्रभाग फेनेस्टा बिल्डिंग सिस्टम्स के शोरूम का उदयपुर में शुभारंभ हुआ।

फेनेस्टा बिल्डिंग सिस्टम्स के बिजनेस हैड साकेत जैन ने कहा कि शोरूम में विभिन्न डिज़ाइनों और रंगों में फेनेस्टा के खिड़कियों, दरवाज़ों की व्यापक रेंज पेश की जाएगी। फेनेस्टा उपभोक्तओं को उत्कृष्ट सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। फेनेस्टा भारत की एकमात्र कम्पनी है जो यूपीवीसी के निर्माण से लेकर उत्पादों के इन्सटॉलेशन एवं उत्कृष्ट आफ्टर सेल्स सेवाओं में सक्रिय है।

उत्पादों की रेंज विशेष रूप से यूके एवं ऑस्ट्रिया में डिज़ाइन की जाती है। फेनेस्टा के उत्पादों को भारत के विविध एवं चरम जलवायु के अनुकूल बनाने के लिए हर कदम पर इनकी गुणवत्ता की कड़ी जांच की जाती है। फेनेस्टा के उत्पाद अपने खास फीचर्स जैसे नॉइस इन्सुलेशन, रेन प्रूफ, डस्ट प्रूफ के साथ-साथ स्टाइलिश होने के लिए देश भर के अग्रणी बिल्डरों, आर्कीटेक्ट्स एवं डिज़ाइनरों में बेहद लोकप्रिय हैं।

'मैजिकल स्पेस एडवेंचर' ऑफर लॉन्च

उदयपुर। कोलगेट पॉमोलिव (इंडिया) लि. ने बच्चों के लिए 'मैजिकल स्पेस एडवेंचर' ऑफर लॉन्च किया, जो हर रोज अपनी खुद की कहानियां बनाने तथा एक नया मैजिकल ब्रह्मांड तलाशने में मदद करेगा। यह आकर्षक ऑफर इंदिरा गांधी प्लेनेटेरियम, लखनऊ में एनजीओ, 'एक्शन एड' के साठ बच्चों के साथ लॉन्च किया गया, जो डोम आकार के ऑडिटोरियम में बैठते ही मुग्ध हो गए। बच्चों के लिए रात का आकाश जीवंत हो उठा और वे ऑफर पैक के स्पेस कैरेक्टर्स के साथ एडवेंचर ट्रिप पर जाने के लिए उतावले हो गए। बच्चों ने असली आकाश का अनुभव लिया और सौरमंडल, ग्रहों, ब्लैक होल, आकाशगंगा, स्पेस शॉवर्स तथा धूमकेतु के बारे में रोचक जानकारी हासिल की। इस अवसर पर एक डेंटिस्ट भी मौजूद थे, जो बच्चों को ओरल केयर के महत्व के बारे में समझा रहे थे। कोलगेट की 'मैजिकल स्पेस एडवेंचर' में कट करने, खेलने और सीखने की तीन रोचक थीम हैं। यह ऑफर बच्चों को अपना खुद का रहस्यमयी ब्रह्मांड बनाने तथा अपनी रचनात्मकता का विकास करने में मदद करेगा। कोलगेट का मैजिकल स्पेस एडवेंचर ऑफर कंपनी के लोकप्रिय टूथपेस्ट ब्रांड, कोलगेट स्ट्राँग टीथ के 50 ग्रा., 100 ग्रा., 200 ग्रा., 300 ग्रा. तथा 500 ग्रा. के पैक्स में उपलब्ध है।

वेल्यु क्लब प्रोग्राम की घोषणा

उदयपुर। वी मार्ट रिटेल लि. ने रिवार्ड प्रोग्राम को प्रस्तुत करने की घोषणा की। वेल्यु क्लब- एक अनुठा रिवार्ड प्रोग्राम है, जो ग्राहकों की खरीददारी को ज्यादा लाभदायक बनाता है। वी मार्ट लि. के सीएमडी ललित अग्रवाल ने कहा कि यह प्रोग्राम ग्राहकों को उनकी खरीददारी के आधार पर पुरस्कार व प्रोत्साहन देता है। वेल्यु क्लब अपने टेगलाइन, एड रिवार्डस एड हैप्पीनेस को लेकर एक बिना कार्ड का लायल्टी प्रोग्राम है जहां अपना 10 संख्या का सही मोबाइल नम्बर देकर ग्राहक वेल्यु क्लब का सदस्य बन सकते हैं। वेल्युक्लब एक बहुस्तरीय प्रोग्राम है, जो ग्राहकों के वी मार्ट से अब तक की खरीददारी के आधार पर पुरस्कृत करने का लक्ष्य रखता है। वेल्यु क्लब नियमित ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करने का एक माध्यम है। यह प्रोग्राम हमें वी मार्ट के नियमित ग्राहकों को पहचानने में मदद करेंगा, ताकि हम इन्हें विशेष सुविधाएं जैंसे फ्री पार्किंग, इओएसएस का विशेष प्रिव्यु, नए संग्रह के लांच की सूचना व फ्री बेग इत्यादि दे सके। हम आशा करते है कि इस प्रोग्राम की सहायता से ग्राहकों से हम और अधिक जुड़ सकेंगे।

'मोदी का एक ही मिशन-तुम झाड़ू ले लो, पैसे मुझे दे दो'

- ऐतिहासिक श्रम शक्ति महासम्मेलन में उमड़ा जन सैलाब-

उदयपुर। डबोक स्थित धूणीमाता मेला ग्राउण्ड पर बुधवार को ऐतिहासिक श्रम शक्ति महासम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें इंटक के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जी. संजीव रेड्डी ने मोदी सरकार की नीतियों पर जमकर प्रहार किया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार का एक ही मिशन है, 'तुम झाड़ू ले लो, पैसे मुझे दे दो और मेहनत करो।' विमुद्रीकरण के बाद किसान और मजदूर वर्ग की रोजी-रोटी संकट में हैं। दो करोड़ लोग बेरोजगार हो गए, दुकानदारों का धंधा चौपट हो गया है।

चुनाव से पहले मोदी ने विदेशों में जमा काले धन को वापस लाने व हर देशवासी के खाते में 15 लाख रुपए डालने का वादा किया था, उसे पूरा करना तो दूर, नोटबंदी करके गरीब के घर में रखा 1500 रुपए तक लूट लिया। ये कैसी सरकार है? काला धन तो नहीं आया, मोदी ने खुद मुंह काला कर लिया। न्यूनतम मजदूरी को तरस रहा मजदूर अपने खाते से अपना पैसा नहीं निकाल सकता? और तो और नई श्रमिक नीति में अब हड़ताल करने पर 5 साल की कैद और 2 लाख रुपए के जुर्माने का तानाशाही प्रावधान किया गया है। अब नीतियां मालिकों के पक्ष की ही बन रही हैं। श्रम विरोधी नीतियों को और बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि अच्छे दिन चाहिए तो हमें बुरे दिनों की इस सरकार को उखाड़ कर कांग्रेस को वापस लाना होगा।

उदयपुर सीमेंट मजदूर संघ की ओर से आयोजित इस महासम्मेलन में इंटक अध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली ने कहा कि सीटू, एटक, बीएमएस, एचएमएस को एक करके श्री रेड्डी ने मजदूरों व किसानों के हित में पूरे देश में एक मंच पर आवाज बुलंद करने का भागीरथ प्रयास किया है। न्याय की लड़ाई के दौरान खुद मुझे सात बार जेल जाना पड़ा, तीन बार प्राणघातक हमले हुए मगर मैं कभी अपने लक्ष्य से विलग नहीं हुआ। राजस्थान के सभी जिलों में इंटक सेवादल इकाइया, महिला इकाइयां, मुस्तैदी से काम कर रही हैं। धरतीपुत्र करोड़ों टन अनाज उगाता है, मगर उसके मूल्य निर्धारण का उसे अधिकार नहीं है। ललित मोदी को 9 लाख करोड़ का बेलआउट पैकेज देने वालों के कार्यकाल में 7343 किसानों ने आत्महत्या कर ली मगर गरीब के घर कोई भी भाजपा नेता उसका हाल तक पूछने नहीं गया।

पूर्व केन्दीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने कहा कि मेवाड़ की धरा पर शुरू हुआ संघर्ष का यह सिलसिला लगातार जारी रहेगा। पांवों में बार-बार छाले पड़ेंगे मगर हम संकल्प के साथ सफलता की ओर यूं ही कदम बढ़ाते चलेंगे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता व विधायक डॉ. महेन्द्रजीतसिंह मालवीया ने याद दिलाया कि बांसवाड़ा में जगदीशराजजी श्रीमाली के सफल व कुशल चुनाव प्रबंधन की बदौलत हम जिला परिषद की सभी सीटें जीतने में कामयाब हुए।

सम्मेलन में पूर्व विधायक मांगीलाल गरासिया, जिला कांग्रेस प्रभारी नारायणसिंह बडोली, नेशनल सीमेंट वर्क्स फैडरेशन के महामंत्री देवराज सिंह, किशन त्रिवेदी, बाबूलाल धाभाई, गौतमलाल आमेटा, मांगीलाल प्रजापत, कन्हैयालाल नागदा, बलवीरसिंह राजावत, देशराजसिंह, सतीश व्यास, खुशवेन्द्र कुमावत, ख्यालीलाल मालवीय, चंदा सुहालका, खूबीलाल मेनारिया, राजीव सुहालका, विनोद पानेरी, लक्ष्मीलाल जोशी सहित राजस्थान इंटक, महिला इंटक, हैण्डपम्प मिस्त्री इंटक संघ, प्रांतीय नल मजदूर संघ फैडरेशन, पीडब्ल्यूडी फैडरेशन, बिजली फैडरेशन, रोडवेज संघ, आल इंडिया सीमेंट फैडरेशन, उदयपुर जिले व मावली के वर्तमान व पूर्व कांग्रेसजन, पूर्व सरपंच व उप सरपंच तथा देशभर से आए इंटक पदाधिकारी मौजूद थे। स्वागत भाषण अध्यक्ष केशूलाल सालवी जबकि धन्यवाद राज्य यूथ इंटक अध्यक्ष नारायण गुर्जर ने दिया।

51 किलो की माला पहनाई :

कार्यक्रम में उदयपुर सीमेंट मजदूर संघ की ओर से प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली का जन्मदिन गुड़ का केक काटकर मनाया गया और श्रीमाली को 51 किलो फूलों की माला पहनाई गई।

इन्फ्रॉस्ट्रक्चर को बढ़ावा देने से विकास को रफ्तार मिलेगी

वंडर सीमेंट लि. के एमडी जगदीशचन्द्र तोशनीवाल ने कहा कि इस साल के बजट से स्पष्ट रूप से वित्त मंत्री द्वारा लोगों की भावनाओं को ऊँचा उठाने की पहल करने के प्रयास का पता चलता है और यही कारण है कि 3,96,135 लाख करोड़ के रिकार्ड आवंटन के साथ हाउसिंग सेगमेंट को बुनियादी ढांचे के रूप में वरीयता दी गई है। नई नीति के मद्देनजर वित्त मंत्री की घोषणा अनुसार वर्ष 2019 तक गरीबों के लिये 1 करोड़ मकान तैयार करने के लक्ष्य, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 133 किमी. प्रतिदिन सड़क निर्माण के लक्ष्य एवं 500 मेट्रो स्टशनों के निर्माण तथा नवीन मेट्रो नीति के परिणामस्वरूप सीमेंट उद्योग में मांग में जबर्दस्त वृद्धि देखे जाने की संभावना है। कुल मिलाकर मैं यह सोचता हूं कि यह बजट विकास की पुरानी रफ्तार को, जो विमुद्रीकरण के प्रभाव के कारण अस्थायी रूप से बाधित हुई है को वापस प्राप्त करने में सहायक होगा।

PIMS

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.)

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

न्यूरोलोजी एवं न्यूरोसर्जरी विभाग

डॉ. सुभाष जाखड़
एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (न्युरो सर्जन)

कन्सलटेन्ट-न्यूरो सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

मस्तिष्क की समस्याओं का विश्वस्तरीय ईलाज

न्यूरोलोजी सेवाएं

- अत्याधुनिक न्यूरो आई.सी.यू एवं स्ट्रोक यूनिट
- ऐपीलेप्सी क्लिनीक (मिर्गी)
- मुवमेंट डिसआर्डर क्लिनीक
- लकवा (Stroke)
- मिर्गी व झंझानाहट
- माईग्रेन (सिरदर्द)

न्यूरोसर्जरी सेवाएं

- एक्सिडेन्ट व ट्रोमा
- मस्तिष्क व स्पाईनल कोर्ड गांठ
- ऐनिरीयुस्म क्लिपिंग सर्जरी
- सिर व रीढ़ की हड्डी के विभिन्न ऑपरेशन
- स्लिप डिस्क, सर्वाइकल डिस्क
- हाईड्रोसीफेलस (सिर में पानी भरना)
- पिट्युटरी ग्रंथी का ऑपरेशन

भामाशाह स्वास्थ्य
बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जॉच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयाँ

SAI TIRUPATI UNIVERSITY
(Established by the Rajasthan State Legislative Assembly and as per Sec. 2(F) of UGC Act 1956)

-:जानकारी एवं अपोइंमेंट के लिए सम्पर्क करें:-
0294-2980077, 9587890079, 9587890085

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।